17-9-2001

नथिंग न्यू के स्मृति स्वरूप बन प्रकृति का खेल देखो

आज बापदादा के पास जाते ही क्या देखा कि बापदादा बहुत आलमाइटी अथॉरिटी रूप में विश्व के चारों ओर आत्माओं को, प्रकृति को सकाश दे रहे हैं। मैं भी दूर से ही देख-देख अपने को भी बाप समान स्थिति में अनुभव कर रही थी। सच तो वह अथॉरिटी और पावरफुल स्टेज कितनी महान और प्यारी है। कुछ समय के बाद बाबा की दृष्टि मेरे ऊपर गई। मैं दृष्टि मिलते ही

नजदीक जाते मिलन मना रही थी। बाबा बोले, बच्ची आज विश्व की हलचल का समाचार लाई हो!

मैं मुस्कराई, बाबा बोले, बच्ची यह हलचल ही मीठे बच्चों को अचल बनाने वाली है। तो सब बच्चे अचल हैं ना! क्योंकि पहले से ही जानते हैं कि यह तो होना ही है। अति का बढ़ना ही परिवर्तन की निशानी है। इसलिए नथिंगन्यू के स्मृति स्वरूप बन प्रकृति का खेल देखना है। जब आप बच्चे इस वर्ष संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन का मना रहे हैं तो प्रकृति आप मालिकों का आर्डर तो मानेगी ना! बोलो, प्रकृतिजीत बापदादा के बालक सो मालिक बच्चे, जैसे प्रकृति अपना कार्य जोरशोर से कर रही है, ऐसे ही बच्चे भी स्व के संस्कार परिवर्तन का कार्य तीव्रगति से कर रहे हैं वा प्रकृति का सहयोग देखने में ही बिजी हो गये हैं। इतनी आत्मायें नाहेक मृत्यु से परेशान हो रही हैं तो अपने बहन, भाइयों के ऊपर रहम करो। मनसा द्वारा शान्ति की सकाश दो। समय की पुकार, आत्माओं की पुकार, भक्तों की पुकार सुन रहे हो ना! तो अपने आपको चेक करो कि अपने मन-बुद्धि की लाइन वाइसलेस पावर द्वारा क्लीयर और क्लीन है? क्योंकि वर्तमान समय की हलचल के वायुमण्डल प्रमाण कोई भी समय अचानक कहाँ भी किसी समस्या को पार करने के लिए बुद्धि की लाइन बहुत प्युअर चाहिए। जो समय पर एक्युरेट टचिंग हो सके। क्या करना है, क्या होना है - यह स्पष्ट हो जाए और इसी साधन द्वारा सेफ हो जायेंगे। यह साधन इस समय के वायुमण्डल प्रमाण हर बात का समाधान है। इसलिए बिन्दु आत्मा हूँ, ज्योति बिन्दु बाबा के कनेक्शन द्वारा बिन्दु लगाए डबल लाइट बन उड़ते चलो, सकाश देते चलो, मनसा सेवा को बढ़ाओ। निर्भय बन, बेफिकर बादशाह की स्थिति में स्थित रहो। सदा यह याद रहे कि होना ही था, वह हो रहा है।

इसके बाद बाबा ने डबल फारेनर्स बच्चों को भी बहुत-बहुत मीठे स्नेह स्वरूप से याद किया और कहा मेरे डबल फारेनर्स बच्चे दूर रहते भी

बापदादा के नयनों के नूर हैं। मैजारिटी बच्चों के दिल में नयनों में बस बाबा-बाबा ही समाया हुआ है। उसी एक याद के बल से और सेवा के उमंग-उत्साह के कवच से आगे बढ़ रहे हैं। बापदादा भी विशेष बच्चों को याद का रिटर्न दिल का सहयोग सदा देते रहते हैं इसलिए हर बच्चे को नाम सहित बापदादा की याद देना।

भारतवासी बच्चे तो बापदादा की कर्मभूमि, वरदान भूमि मधुबन के समीप हैं। बाबा के दिल के भी समीप हैं। परिवार के संगठन का साकार में भी साथ है। तो भारतवासी बच्चों को भी बहुत-बहुत याद देना। इसके बाद बाबा को वर्तमान वी.आई.पीज के प्रोग्राम प्रति समाचार सुनाया। तो बापदादा सुनते बहुत मीठा मुस्कराया और बोले, समय के वायुमण्डल को देख सुन फिर भी अपना भाग्य लेने के लिए उमंग-उत्साह से पहुँच गये हैं। सभी बच्चों का शान्ति की शक्ति के प्रति और शान्ति सागर बाबा से प्यार के प्रति मधुबन पहुँचना देख बापदादा विशेष हर्षित हो मुबारक दे रहे हैं कि सदा इसी लगन से आगे बढ़ते और औरों को भी आगे शान्ति की आध्यात्मिक शक्ति के अनुभव का परिचय देते रहना। बापदादा की तो हर बच्चे में बहुत-बहुत दिल से श्रेष्ठ उम्मीदें हैं कि यह हर एक बच्चा अपने अनुभव द्वारा औरों को भी बाबा के कार्य में, शान्ति के कार्य में सहयोगी बनायेंगे। बापदादा हर बच्चे को देख खुश है कि हिम्मत रख अपने को परमात्म मदद के पात्र बना दिया। अब इसी सम्बन्ध द्वारा सहयोगी सो योगी बनने के संकल्प को दृढ़ रखते हुए सफलता का अनुभव करते रहना।

ऐसे कहते बापदादा बोले, देखो बच्ची सभी मेहमान बनकर आये और महान बनने के पात्र, परमात्म सन्देशवाहक बन जा रहे हैं, अधिकारी बन जा रहे हैं। ऐसे अधिकारी बच्चों को बाबा भी स्नेह से इस संसार के तनावपूर्ण वायुमण्डल से सदा सेफ रहने के लिए सौगात दे रहे हैं, जिससे सदा टेन्शन से न्यारे और बाबा के प्यारे कमल पुष्प समान रहेंगे। ऐसे कहते बाबा ने बहुत अच्छी सौगात दिखाई, वह क्या थी ? वह एक सुन्दर छत्रछाया थी। जैसे

राजाओं के तख्त के ऊपर छत्रछाया दिखाते हैं, ऐसे बड़ी सुन्दर लाइट और माइट सम्पन्न चमक रही थी और उसमें जो छतरी खोलने की तारें होती हैं वह अष्ट तारें थी, जिन तारों पर एक एक विशेष शक्ति लिखी हुई थी। लाइट भी भिन्न-भिन्न रंग की थी और शब्द भी लाइट के शब्दों में थे। छतरी के नीचे चारों ओर छोटे-छोटे झुमके लटक रहे थे, उस हर एक झुमके पर नैतिक मूल्य लिखे हुए थे जो भी बहुत विचित्र लग रहे थे। छतरी के बाहर ऊपर में ज्योर्तिबिन्दु स्वरूप चमक रहा था, जो लाइट फैला रहा था। सौगात तो बड़ी सुन्दर अमूल्य थी। बापदादा ने आये हुए हर बच्चे के लिए यह सौगात देते हुए बोला, कोई भी समस्या आये - चाहे मन की, सम्बन्ध-सम्पर्क की, प्रकृति के वायुमण्डल की, तो यह बाबा द्वारा दी हुई सौगात ''छत्रछाया'' याद आने से समस्या समाधान के रूप में बदल जायेगी। मन में दिलशिकस्त भाव बदली हो शक्तिशाली दिलखुश भाव और भावना प्रकट होगी। लेकिन यह सदा याद रखना -''सच्ची दिल पर परमात्म साहेब राज़ी रहेंगे''। ऐसे बापदादा से मिलन मनाए मैं साकार वतन में पहुँच गई।